

वार्तालाप-549, जम्मू, 7.4.08  
Disc.CD No.549, dated 7.4.08 at Jammu

समय-0.02-1.25

जिज्ञासु- बाबा, बाप जो बच्चों को वर्सा देते हैं वो प्यूरिटी के आधार पर देते हैं या पहचान के आधार पर देते हैं?

बाबा- पुरुषार्थ के आधार पर देते हैं। प्यूरिटी को देखेंगे तो सन्यासियों में जास्ति प्यूरिटी का बैलेन्स है। चाहे वो हद के सन्यासी हों और चाहे बेहद के सन्यासी हों। चाहे बेसिक के हों और चाहे एडवान्स के हों। बाप बच्चों की प्यूरिटी को नहीं देखता कि वर्तमान में प्यूरिटी क्या है। उनके पुरुषार्थ की तीव्रता को, लगन को देखता है। जितनी हिम्मत उतनी मदद बाप स्वतः ही देता है। बाप पतित को नहीं देखता कि ये पतित है इसको वर्सा नहीं देना है। पतित को देखता है या उनके पुरुषार्थ को देखता है? पुरुषार्थ को देखता है। और पावन है ही ऑलरेडी तब तो पुरुषार्थ कुछ करना ही नहीं है। दृष्टि सिविल बन जाए (तो) और क्या चाहिये?

Time: 00.02-01.25

**Student:** Baba, does the Father give inheritance to the children on the basis of purity or on the basis of the recognition (of the Father)?

**Baba:** He gives it on the basis of the *purusharth* (spiritual effort). If you see purity, the *sanyasis* have more balance of purity, whether they are the *sanyasis* in a limited sense or in an unlimited sense, whether they are in the basic (knowledge) or in the advance (knowledge). The Father does not see the purity of the children, what their level of purity is at present. He sees the intensity, the devotion of their *purusharth*. The more they show courage, the more the Father helps them automatically. The Father does not see the sinful one that this one is sinful; he should not be given the inheritance. Does He see their impurity or their *purusharth*? He sees their *purusharth*. And if they are already pure, they need not make any *purusharth* at all. If the eyes become *civil* (civilized), then what else is required?

समय-03.30-04.30

जिज्ञासु-अभी जो समय चल रहा है महाभारत का.....

बाबा-महाभारत अभी कहाँ चल रहा है? अभी तो अंदर-2 आग सुलग रही है।

जिज्ञासु-चल तो रहा है। इसमें...

बाबा-युद्ध नहीं चल रहा है। युद्ध चलेगा तो आपाधापी मच जायेगी।

जिज्ञासु-विराट रूप भगवान को क्यों दिखाना पड़ता है?

बाबा-विराट रूप भगवान को इसलिए दिखाना पड़ता है कि मेरे बच्चों अलर्ट हो जाए। सबको दिखाता है विराट रूप? और जो नास्तिक है वो विराट रूप को समझेंगे क्या? (किसीने कहा- नहीं समझेंगे।) दुर्योधन समझेंगे क्या? वो तो नहीं समझेंगे। दुःशासन नहीं समझेंगे। समझेंगे कौन? जो स्नेही आत्मायें होंगी उन्हीं के पल्ले पड़ेगा विराट रूप। विराट रूप क्या है? पहले साधारण रूप और बाद में विकराल रूप।

Time: 03.30-04.30

**Student:** The period of Mahabharat that is going on now....

**Baba:** Is the Mahabharat [war] going on now? Now the fire is kindling from within.

**Student:** It is certainly going on. In it....

**Baba:** The war is not going on. If the war starts, there will be a chaos everywhere.

**Student:** Why does God have to show the cosmic form (*virat roop*)?

**Baba:** God has to show the cosmic form as [He thinks:] "My children should become alert." Does He show the cosmic form to everybody? Moreover, will the atheists understand the cosmic form? (Someone said: They won't understand.) Will Duryodhan understand it? He will certainly not understand it. Dushasan will not understand it. Who will understand it?

Only the loving souls will understand the cosmic form. What is the cosmic form? First it is the ordinary form and then it is the ferocious form (*vikral roop*).

समय-4.35-6.43

जिज्ञासु-बाबा जैसे मुरली में बोला हुआ है कि पहले एग्रीमेन्ट होगा।

बाबा-एग्रीमेन्ट होगा? किसके साथ?

जिज्ञासु-मुरली में बोला हुआ है कि पहले एग्रीमेन्ट होगा फिर एन्गेजमेंट होगी उसके बाद....।

बाबा-अच्छा बच्चों का बाप के साथ।

जिज्ञासु-हाँ।

बाबा-हाँ, पहले एग्रीमेन्ट होता है फिर एन्गेजमेंट होता है....

जिज्ञासु- .... फिर सम्पूर्ण समर्पण समारोह होगा।

बाबा-हाँ, सम्पूर्ण समारोह होगा। बाप के साथ ही रहेंगे। जैसे शिव और शंकर अलग-2 हैं तो पहले एन्गेजमेंट होता है या एग्रीमेंट होता है? एग्रीमेंट होता है। कि भई ये बाप ऐसा है और बच्चा ऐसा है। बच्चे अगर ये करेंगे तो बाप इसके साथ ये करेंगे, ऐसे रिटर्न देंगे ये एग्रीमेंट हो गया ना। बाप ऐसा ज्ञान देगा, तो बच्चे उसका ये रिटर्न करेंगे। तो ये एग्रीमेंट हुआ फिर एन्गेजमेंट हो जाता है। प्यार जुट जाता है माना एन्गेजमेंट हो गया। और प्यार जुट जाने के बाद फिर याद शुरू होती है तीखी। जब याद का बैलेन्स भरपूर हो जाता है तब फिर सम्पूर्णता होगी। शिव शंकर मिलकर एक हो जाते हैं। जैसा बाप के लिए वैसे बच्चों के लिए नम्बरवार।

Time: 04.35-06.43

**Student:** Baba, it has been said in the *Murli*, "First an agreement will take place".

**Baba:** An agreement will take place? With whom?

**Student:** It has been said in the *Murli*, "First an agreement will take place and then the engagement will take place. Later....."

**Baba:** OK, [the agreement] of the children with the Father.

**Student:** Yes.

**Baba:** Yes, first an agreement takes place then the engagement takes place...

**Student:** .....Then the complete dedication ceremony will take place.

**Baba:** Yes, the complete ceremony will take place. They will stay only with the Father. Just as Shiv and Shankar are different; so, does the engagement take place first or does an agreement take place? An agreement takes place that the Father is like this and the child is like that. If children do this, the Father will do that to them, He will give the return in this way. This is an agreement, isn't it? If the Father gives such knowledge, the children will give this in return. So, this is an agreement. Then the engagement takes place. Love develops [between them], means the engagement takes place. And after the development of love, intense remembrance starts. When there is enough balance of remembrance, then perfection will come. Shiv and Shankar combine and become one. As is the case with the Father, so is the case with the children number wise (according to their capacity).

जिज्ञासु-बाबा, जिन्होंने बाप को पहचाना ही नहीं वो क्या करेंगे?

बाबा-आगे चलके पहचान लेंगे। जिन्होंने पहचाना उन्होंने कौनसे कुलाबे तोड़ लिए?

जिज्ञासु-जिनको नहीं पता वो तो विरोधी ही...।

बाबा-जिनको नहीं पता है वो और अच्छे हो सकते हैं। लास्ट में आकर फास्ट जा सकते हैं।

**Student:** Baba, what will those who have not recognized the Father at all do?

**Baba:** They will recognize in future. What great work have those who have recognized done?

**Student:** Those who don't know [Him] [will remain] opponents only...

**Baba:** Those who do not know can become still better. They can come in the last and go fast.

समय—6.50—9.25

जिज्ञासु—बाबा, जो महाकाली को तीसरा नेत्र दिखाते वो किसका नेत्र है?

बाबा— शिव नेत्र कहा जाता है। वो देवी को भी दिखाते हैं और एक देवता को भी दिखाते हैं। वो देवता कौन है? शंकर। शंकर को महाकाल के रूप में और देवी को महाकाली के रूप में दिखाया जाता है। तो जो महाकाली को याद है तीसरे नेत्र के रूप में वो दिल और दिमाग पर छाई हुई याद है जो बिसरने नहीं देती। भूलना चाहे तो भी भूल नहीं सकती।

Time: 6.50-9.25

**Student:** Baba, Mahakali is shown to have a third eye; whose eye is it?

**Baba:** It is called the *Shivnetra* (Shiva's eye). A *devi* (a female deity) as well as a *devta* (a male deity) is shown to have that eye. Who is that *devta*? Shankar. Shankar is shown in the form of *Mahaakaal* (the great death) and the *devi* is shown in the form of *Mahakaali*. So, the remembrance of *Mahakali* in the form of the third eye; it is a remembrance which is imprinted on her heart and mind which does not allow her to forget [the Father]. She cannot forget Him even if she wants to.

भल कम्प्लेन्ट करे हमारा निश्चय पत्र में से, सरेण्डर लेटर में से नाम उड़ा दो। अरे, नाम उड़ा दो, न उड़ा दो क्या अंतर पड़ता है? फिर बार—2 ये बात बुद्धि में अटक क्यों होती है कि नाम उड़ा जाता तो ज्यादा अच्छा रहता? क्या अच्छा रहता? समझते हैं कि नाम अगर हट जाएगा निश्चय पत्र में से; निश्चय पत्र जो लिखाया जाता है उसमें से नाम ही उड़ा जाएगा तो बच्चे याद नहीं करेंगे। किसको? माँ को याद नहीं करेंगे। तो थोड़ी मुक्ति मिलेगी। लेकिन मुक्ति हो नहीं सकती। इसीलिए बोला था.... और बाप की विशेष नज़र किसके ऊपर रहती है? पहले बच्चों के ऊपर या पहले माँ के ऊपर?

जिज्ञासु— माँ के ऊपर।

बाबा— जितना याद करेंगे उतना मैं तुम्हारे साथ हूँ।

जिज्ञासु— मतलब महाकाली याद में टिक गई इसीलिए तीसरा नेत्र दिखाते हैं।

बाबा— हाँ, जी। जो स्मृतियाँ हैं पूर्व जीवन की वो मिट नहीं सकती। इसीलिए जो चित्र बनाते हैं महाकाली के भल देखने के लिए पाँव छाती के ऊपर रखा हुआ है लेकिन मस्तक में शंकर का चित्र भी रखा हुआ है।

Although she may complain [saying], “My name should be removed from the letters of faith (*nischay partra*), from the surrender letters”. Arey, whether the name is removed or not, does it make any difference? Then why does this topic attack her intellect again and again that it would be better if the name is removed (from the letter of faith)? What would have been better? She thinks that if the name is removed; if the very name is removed from the letters of faith that people are made to write, then the children will not remember. Whom? They will not remember the mother. So [she thinks:] “I will be relieved a bit.” But she cannot be relieved. That is why it was said..... And on whom does the Father have special attention? [Does he have attention] on the children first or the mother?

**Student:** On the mother.

**Baba:** The more you remember [Me], the more I am with you.

**Student:** It means that *Mahakali* became stable in the remembrance; this is why she is shown to have the third eye.

**Baba:** The memories of the past life cannot be erased. This is why, in the pictures of *Mahakali* that are prepared, although it appears that she has placed her leg on (Shankar's) chest, but Shankar's picture has also been placed on her forehead.

जिज्ञासु—अष्टदेव भी याद में तीखे जाते हैं ना उनको किसी को तो तीसरा नेत्र नहीं दिखाया है।

बाबा—अष्टदेव याद में तीखे जाते हैं वो लवलीन स्टेज की याद होती है या सामना करने की स्थिति की याद होती है?

जिज्ञासु—लवलीन।

बाबा—लवलीन स्टेज अलग होती है और सामना करने के लिये अलग स्टेज होती है।

**Student:** Even the eight deities gallop ahead in remembrance, but none of them have been shown to have the third eye.

**Baba:** The eight deities gallop ahead in remembrance. Is that a remembrance of the *loveleen*<sup>1</sup> stage or the remembrance of the stage of confronting?

**Student:** *Loveleen*.

**Baba:** The *loveleen* stage is different and the stage for confronting is different. ...

समय—9.27—11.13

जिज्ञासु— बाबा जैसे मुरली में बोला है आपने कि एक आँख में मुक्ति देखो और दूसरी आँख में जीवनमुक्ति।

बाबा— हाँ, दो आँखें हैं ना शिवबाबा को, तो बच्चों को भी दो आँखें होंगी। शिवबाबा को दो आँखें हैं कि नहीं? (जिज्ञासु—है।) तुम बच्चे हो बाप दादा के नूर। बाप के नूर, नूर माना रोशनी। तो आँखें ही रोशनी होती हैं। एक ब्रह्मा और दूसरा शंकर। ये दो हो गए ना। एक गुण देखता है और एक अवगुण भी देखता है। तो दो रोशनी हो गई, दो नेत्र हो गए। दो नेत्रों के द्वारा सारी दुनियाँ को देख लेते हैं। हर सितारे में अपनी—2 दुनियाँ है और हर सितारे की जो भी दुनियाँ है अपनी 84 जन्मों के या कम जन्मों के कनेक्शन में आने वाली उस दुनियाँ में गुणदोषमयी सृष्टि है। गुण भी है, अवगुण भी है। गुणी भी हैं, अवगुणी भी हैं। हर सितारा रूपी आत्मा के दो नेत्र हैं। जैसे बाप के सहयोगी विशेष दो आत्मार्य हैं। विष्णु तो कोई अलग से होता ही नहीं है।

जिज्ञासु: ब्रह्मा सो विष्णु वो तो एक ही चीज़ है।

बाबा: वो तो एक ही बात हो गई। तो ऐसे ही ये दो नैनों के विशेष नूर है। बाप दादा की आँखे कही जाती है।

**Time: 9.27-11.13**

**Student:** Baba, it has been said in a Murli, see *mukti* (liberation) in one eye and *jeevanmukti* (liberation in life) in the other.

**Baba:** Yes, Shivbaba has two eyes, hasn't He? So, the children will also have two eyes. Does Shivbaba have two eyes or not? (Student: He has.) You children are BapDada's *nuur*. [You are] the Father's *nuur*; *nuur* means light. The eyes themselves are the light. One is Brahma and the other is Shankar. These are the two [eyes], aren't they? One sees virtues and the other sees bad traits as well. So, there are two lights, two eyes. He sees the entire world through the two eyes. Every star has its own world. And the world of every star [includes] the souls which come in its connection in 84 births or fewer births. This world is full of the creation which has good and bad traits. There are good as well as bad traits. There are virtuous ones as well as vicious ones. There are two eyes of every star like soul. Just as there are two special helper souls of the Father. There is no Vishnu separately.

**Student:** Brahma becomes Vishnu; they are one and the same.

**Baba:** That is one and the same thing. Similarly, these are the special lights of the two eyes. They are called BapDada's eyes.

<sup>1</sup> merged in love.

समय—19.35—21.08

जिज्ञासु—बाबा, ब्रह्मा बाबा ने लौकिक के जो खून के रिश्ते के बच्चे हैं उनको तो निकाल दिया। 'चलना है तो ज्ञान में चलो नहीं तो गेट आउट'। लेकिन ज्ञान के जो बच्चे हैं ज्ञानमार्ग में उनसे क्यों मोह इतना है अभी भी गुलजार दादी में जाते रहते हैं?

बाबा— ज्ञान में वो बच्चा है या बच्ची है? (जिज्ञासु—बच्ची।) और उनकी आत्मा का अभी सूक्ष्म शरीर है या स्थूल शरीर है?

जिज्ञासु— सूक्ष्म शरीर।

बाबा— फिर? ब्रह्मा के भी अगर बच्चे कहें तो बच्चे कौन हैं? साकार में जब तक ब्रह्मा रहे शिव का निराकार पार्ट रहा, बिंदी के रूप में पार्ट बजाया। ब्रह्मा ने साकार रूप में पार्ट बजाया। उन दोनों मात-पिता के बच्चे कौन थे? कोई बच्चे थे कि नहीं थे जो बाद में एडवान्स में आते हैं? कौन हैं? अरे, बच्चे के रूप में कोई आत्मायें रहीं या नहीं रहीं?

जिज्ञासु— रहे।

बाबा— कौन-कौन? प्रजापिता और जगदम्बा।

Time: 19.35-21.08

**Student:** Baba, Brahma Baba banished his *lofik* children of blood relation, [ saying:] "If you wish to follow, follow the knowledge; otherwise, get out". But why does he have so much attachment for the children in the path of knowledge? He still enters Gulzar Dadi.

**Baba:** Is he a son or a daughter in knowledge? (Student: Daughter.) And does that soul have a subtle body or a physical body at present?

**Student:** A subtle body.

**Baba:** Then? Even if we speak about Brahma's children; who are his children? As long as Brahma was alive in a corporeal form, Shiv played an incorporeal part, in the form of a point. Brahma played a part in the corporeal form. Who were the children of both those mother and father? Were there any children or not who enter the advance (knowledge) later on? Who are they? Arey, were there any souls in the form of children or not?

**Student:** There were.

**Baba:** Who were they? Prajapita and Jagadamba.

समय—22.15—23.10

जिज्ञासु—बाबा, शिव और शक्ति अलग-अलग है कि एक ही है?

बाबा— आत्मायें आत्मिक स्थिति में जब टिक जायें तो शिवशक्तियाँ हो जाती हैं। अगर पुरुष चोला है तो पांडव कहे जाते हैं। अगर स्त्री चोला है और देहमान खत्म हो गया, देह की दुनियाँ भी खत्म हो गई। देह की दुनियाँ से, देह के सम्बंधियों से कुछ लेना देना नहीं रहा। किसकी तरफ बुद्धि हो गई? एक बाप दूसरा न कोई। तो शिव की शक्तियाँ हैं। प्रैक्टिकल में हैं, साकार में हैं। और किसी को सपोर्ट करती है तो शक्तियाँ नहीं हैं।

Time: 22.15-23.10

**Student:** Baba, is Shiva and *shakti*<sup>2</sup> separate or the same?

**Baba:** When souls become constant in the soul conscious stage, they become *Shivshakti*. If they are in a male body, they are called Pandavas. If they are in female bodies, and if their body consciousness is over, if the world of their body has also ended, if they do not have anything to do with the world of the body, with the relatives of the body, then where is their intellect? One Father and no one else. Then they are *Shivshaktis* in practical, in a corporeal form. If they support someone else, they are not *shaktis*.

---

<sup>2</sup> Consort of Shiva

समय—24.32—25.29

जिज्ञासु— बाबा शंकर को शमशान घाट में बताते हैं। और देवताओं को नहीं बताते।

बाबा— देखा हुआ नहीं देखा? शमशान घाट में जाते हुए देखा नहीं अभी तक इतने दिन ज्ञान में चलते हुए हो गए? जिसका इस दुनियाँ में ममत्व लगा हुआ होगा तो शमशान घाटी वासी हुआ या स्थूल दुनियाँ का वासी हुआ? (किसीने कहा—स्थूल दुनिया का वासी हुआ।) शमशान घाट का मतलब क्या है? मुर्दों की दुनियाँ है। क्या समझे? ये सब मरे पड़े हैं। एक भी जिंदा नहीं है। अज्ञानता की नींद में सब सो रहे हैं। तो शमशान घाट हो गया। मंदिर भी कहाँ बनाते हैं? शहर के बाहर।

Time: 24.32-25.29

**Student:** Baba, Shankar is shown in a cremation ground. No other deity is shown (there).

**Baba:** Haven't you seen? Despite following the knowledge for so many days, haven't you seen [him] visiting the cremation ground? If someone has attachment for this world, then is he a resident of the cremation ground or of the physical world? (Someone said: a resident of the physical world.) What is meant by a cremation ground? It is a world of corpses. What should you think? All these [people] are dead. Not even a single [person] is alive. Everyone is sleeping in the sleep of ignorance. So, it is a cremation ground. Where are his temples built as well? Outside the city.

समय—25.30—26.01

जिज्ञासु—बाबा जो भक्ति ही करते रहते हैं वो भी स्वर्ग में आयेंगे?

बाबा— भक्ति कौनसे युग में करते रहते हैं? कौनसे युग में आपने देखा उनको भक्ति करते हुए? (जिज्ञासु—अभी तो लोग कर रहे हैं।) बाबा— कलियुगी दुनियाँ में उनको भक्ति करते हुए आपने देखा। तो कलियुग में भक्ति की होगी तो ज्ञान कब लेंगे? कलियुगी शूटिंग में ही ज्ञान लेंगे या सतयुगी शूटिंग में ज्ञान लेंगे? कलियुगी शूटिंग जब होगी तो वो आ जायेंगे ज्ञान में।

Time: 25.30-26.01

**Student:** Baba, will even those who just keep performing *bhakti* come to heaven?

**Baba:** In which age do they perform *bhakti*? In which age did you see them doing *bhakti*?

**Student:** People are doing it now.

**Baba:** You saw them doing *bhakti* in the Iron Age world. So, when they have done *bhakti* in the Iron Age, when will they obtain knowledge? Will they obtain knowledge in the Iron Age shooting itself or in GoldenAge shooting? When the IronAge shooting takes place, they will come in knowledge.

समय—26.05—28.50

जिज्ञासु— गणेश जी दिखाते हैं ना उनकी हाथी की सूँड़ होती है और पेट भी बड़ा दिखाते हैं।

बाबा— पेट भी बड़ा दिखाते हैं, कान भी बड़ा दिखाते हैं, आँखें छोटी—2 दिखाते हैं लेकिन बड़ी मदमाती दिखाते हैं। पेट भी बड़ा दिखाते हैं, पूँछ छोटी दिखाते हैं। हनुमान की पूँछ लम्बी—चौड़ी दिखाते हैं। और सारा काम सूँड़ से ही कर लेता है। हाथों की ज़रूरत उतनी नहीं पड़ती है। कुछ अर्थ होगा इसका? कान बड़े—2 का मतलब ज्ञान बहुत सुनता है और दूसरों को ज्ञान बहुत सुनाता है। सुनना और सुनाने का धंधा बहुत करता है। ये ज्ञान सुनने और सुनाने का धंधा कलियुग में ज्यादा होता है या द्वापर में ज्यादा होता है? भक्तिमार्ग तो दोनों ही युगों में है।

जिज्ञासु— कलियुग में।



**Time: 26.05-28.50**

**Student:** Ganeshji is shown, isn't he? He has an elephant's trunk. And he is also shown to have a big belly.

**Baba:** He is also shown to have a big belly; he is also shown to have big ears; he is shown to have small eyes, but they are shown to be very intoxicated (*madmaati*). The belly is also shown to be big; [but] the tail is shown to be small. Hanuman's tail is shown to be long and wide. And he (i.e. Ganesh) does all the work just through his trunk. He does not need the hands much. Does it have any meaning? [He has] big ears means, he listens to a lot of knowledge and also narrates a lot of knowledge to others. He performs the task of listening and narrating a lot. Does this task of listening and narrating take place more in the Iron Age or in the Copper Age? The path of *bhakti* is prevalent in both the ages.

**Student:** In the Iron Age.

बाबा— कलियुग में। इसीलिए सीढ़ी की चित्र में गणेश जी की पूजा कौनसे युग में दिखाई है? कलियुग में दिखाई है। बड़े—2 कान की निशानी किस बात की है? बहुत ज्ञान सुना है और बहुत ज्ञान सुनाया है। ऐसे ही पेट। बहुत बड़ा पेट है। कौनसा पेट? बुद्धि रूपी पेट विशाल है। वैसे भी माथा ज्यादा चौड़ा कौनसे जानवर का होता है? हाथी का माथा बहुत विशाल होता है। बुद्धि रूपी पेट भी कहा जाता है। विशाल बुद्धि है। और पूँछ बहुत छोटी है, पूँछ है विकारों की निशानी। काम विकार की निशानी खास। वो उतना ज्यादा नहीं है। लेकिन मुख में देहभान बहुत भरा हुआ है। आँखों में खास। जानवरों में जितनी मदमाती आँख हाथी की होती है इतना मदमाती आँख और किसी जानवर की नहीं होती है। जब युद्ध के मैदान में हाथियों को खड़ा किया जाता है तो उनको खूब शराब पिलाई जाती है और शराब पीकरके बड़े झूमकरके वो लड़ाई लड़ते हैं। जंजीर सूँड में पकड़ाए दी जाती है। खूब विनाश लीला दिखाते हैं।

**Baba:** In the Iron Age. This is why in the picture of the Ladder; Ganeshji is shown to be worshipped in which age? It is shown in the Iron Age. Big ears indicate what? He has listened to a lot of knowledge and has also narrated a lot of knowledge. Similar is the case of his belly; his belly is very large. Which belly? The belly like intellect is large. Anyway, which animal has a larger forehead? An elephant has a very large forehead. It is also said 'stomach like intellect'. He has a broad intellect. And the tail is very small. Tail is a sign of vices; it is especially a sign of the vice of lust. That is not much. But there is a lot of body consciousness on the face; especially in the eyes. Among the animals, no other animal has as intoxicating eyes as the elephant [has]. When the elephants are lined up in a battlefield, they are made to drink a lot of alcohol. And after drinking alcohol, they fight passionately. A chain is tied to their trunk. They cause a lot of destruction.

**समय—30.55—32.28**

जिज्ञासु— बाबा, जो आज मुरली (अव्यक्त वाणी) चली है 2.4.08 की, ये तो बेसिक वालों की है। इसको एडवांस में सुनाने की क्या दरकार?

बाबा— ये क्या बात हुई? बेसिक वालों की मुरली नहीं है?

जिज्ञासु— नहीं है तो बेसिक वाले.....

बाबा— अरे, तो फिर अव्यक्त वाणी के लिए ही ऐसी बात क्यों उठाते हो? जो बेसिक है, जो प्योर बेसिक है वो ही एडवान्स है। प्योर बेसिक में मनमत घुसेड दी है तो वो बेसिक हो गया। असली जो एडवान्स है वो बाबा की मुरली ही है और बाबा की मुरली में और अव्यक्त वाणियों में कहीं भी कोई कॉस नहीं है। कहीं कॉस देखा? मुरली की पॉइन्ट्स में और अव्यक्त वाणी के पॉइन्ट्स में कहीं कॉस दिखाई पड़ रहा है? नहीं। मुरली ही वास्तव में एडवान्स है। वो बेसिक को उन्होंने छोड़ दिया। मुरली का जो मूल तंत है वो छोड़ दिया और मनुष्यों की मनमत उसमें घुस गई। मनुष्यों ने जैसा उसका क्लैरिफिकेशन किया वो

क्लैरिफिकेशन पकड़ लिया। मूल मुरली को नहीं पकड़ा। करना क्या चाहिए? मूल मुरली को पकड़ना चाहिए। तब कहेंगे हम एक की श्रीमत पर चल रहे हैं।

**Time: 30.55-32.28**

**Student:** Baba, the *murli* (*avyakta vani*) of 2.4.08 that was narrated today belongs to those from the basic (knowledge). What is the need to narrate in the advance (knowledge)?

**Baba:** What is this? Don't the *murlis* belong to those from the basic (knowledge)?

**Student:** No, they are certainly of the basic knowledge....

**Baba:** Arey, then why do you raise such a topic only in case of the *avyakta vanis*? Whatever is basic, the pure basic (knowledge) itself is the advance (knowledge). They have mixed personal opinions in the pure basic (knowledge), so it became the basic (knowledge). Baba's *murli* itself is the true advance (knowledge). And Baba's *murli* does not cross with the *avyakta vanis* anywhere. Have you found any contradiction? Can you see any contradiction between the *murli* points and the *avyakta vani* points? No. The *murli* is itself the advance (knowledge) in reality. They (the Bks) left out that (pure) basic. They left out the original essence of the *murlis* and the personal opinions of the human beings were mixed up in it. They grasped whatever clarification was given by human beings. They did not grasp the original *murli*. What should they do? They should grasp the original *murli*. Then it will be said that they are following the shrimat of One.

**समय—32.30—37.00**

**जिज्ञासु—** बाबा, वर्णसंकर संतान कब और कौनसे टाइम पर होती है?

**बाबा—** वर्णशंकर। शंकर शब्द से ही अर्थ होता है मिक्स। शंकर कोई एक पार्टधारी का नाम नहीं है। तीन आत्मायें प्रवेश करके पार्ट बजाती हैं तब कहा जाता है शंकर। शिव की आत्मा भी पार्ट बजाने वाली है। मुरलियों की क्लैरिफिकेशन कौन करता है? क्लैरिफिकेशन करने वाली आत्मा टीचर के रूप में शिव की है। तो एक तो ये हो गया, दूसरा किसके तन में प्रवेश करता है शिव? राम वाली आत्मा के तन में प्रवेश करता है। दोनों के मिक्स होने से शंकर कहा जाता है। उसमें तीसरी आत्मा भी पढ़ाई पढ़ने के लिए आती है कृष्ण की सोल।

**Time: 32.30-37.00**

**Student:** Baba, when are children of mixed blood (*varnasankar*) born?

**Baba:** *Varnashankar*. The word '*shankar*' itself means 'mix'. Shankar is not the name of any one actor; when three souls enter and play a part he is called Shankar. The soul of Shiva also plays a part. Who gives the clarifications of *murlis*? The soul that gives clarifications in the form of a teacher is Shiva. So, this is one [soul]. The second soul; in whose body does Shiva enter? He enters the body of the soul of Ram. It is said Shankar when both are mixed. A third soul, the soul of Krishna also enters him to study the knowledge.

तो तीन शब्द इकट्ठे कर दिए हैं। शं माना शिव, क माना कृष्ण, र माना राम। तीन आत्माओं का मेल का जो पार्ट है उसे शंकर कहा गया है। ऐसे ही वर्णों में भी शंकर हो जाता है। कैसे हो जाता है? ब्राह्मण की पुत्री है और क्षत्रीय का पुत्र है और दोनों की शादी हो गई। तो बच्चा कैसा पैदा होगा? ब्राह्मणत्व वाला पैदा होगा या मिक्स पैदा होगा? मिक्स पैदा होगा। आज कल जो अनाज के दाने हैं उनमें भी वर्ण संकरता लगाई जाती है। दो पौधों को इकट्ठा कर देते हैं नई जाति पैदा हो जाती है।

So, three words have been combined. *Shan* means Shiva, *ka* means Krishna, *ra* means Ram. The part [resulting] from the combination of three souls is called Shankar; similarly mixing takes place in classes too. How does it happen? [Suppose] there is a daughter of a Brahmin and a son of a Kshatriya and both are married. So, what kind of a child will be born? Will he have the characteristics of a Brahmin or a mixed character? He will be born with mixed characteristics. Nowadays, hybrid varieties of foodgrains are also developed. Two plants are crossed to give rise to a new species.



जिज्ञासु— गीता में बाबा, कहा है कि करने से कुल का नाश, नाश सब धर्मों का हो जाता है। फिर धर्म नाश से सारा कुल पाप से नीचे गिर जाता है। बढ़ने से पाप स्त्रियाँ भी आचरण भ्रष्ट हो जाती हैं। करके उत्पन्न वर्ण शंकर बिल्कुल दूषित कर जाती हैं।

**Student:** Baba, it has been said in the Gita: destruction of a clan leads to the destruction of all the religions. Then due to the destruction of religion, due to sin, the entire clan undergoes downfall. When sins increase, even the women act unrighteously. By giving birth to hybrid children they pollute [the clan] completely.

बाबा— हाँ, तो वो व्यभिचार की ही बात हुई ना? कोई दूसरी बात थोड़े ही है। द्वापरयुग से द्वैत शुरू होता है। द्वापरयुग से पहले एक ही था। एक के साथ संसर्ग, संपर्क, संबंध जुड़ता था। द्वापरयुग से दूसरे धर्म की आत्माएँ आ गई वो व्यभिचार को खराब मानती ही नहीं। वो कहते हैं खूब शादियाँ करो, खूब व्यभिचारी बनो, खूब बच्चे पैदा करो। तो वर्ण शंकरता बढ़ने से संसार में दूषण बढ़ेगा या प्रदूषण कम होगा? बढ़ेगा। तो बढ़ रहा है।

**Baba:** Yes, it is about adultery and nothing else, isn't it? Duality begins from the Copper Age. Prior to the Copper Age, there was only one path. They used to have their connection, contact, and relationship with only one person. Souls of other religions came from the Copper Age and they do not consider adultery to be bad at all. They say, marry many times; become very adulterated; give birth to many children. So, with the increase of mixturity, will pollution increase or decrease in the world? It will increase. So, it is increasing.

भई, धरणी है। धरणी को जितना शुद्ध रखेंगे उतना शुद्ध फल देगी। कन्याएँ माताएँ भी क्या हैं? धरणी हैं। उस धरणी में जितना शुद्ध बीज डाला जाएगा, अव्यभिचारी वृत्ति रखी जाएगी उतना श्रेष्ठ परिवार बनेंगे। नहीं तो परिवार भ्रष्ट होते जाएंगे। बाप कुछ और कहेगा, बच्चे कुछ और कहेंगे और करेंगे। मत उनकी दोनों की मिलेगी नहीं आपस में। इसीलिए गीता में भी लिखा हुआ है जब स्त्रियाँ प्रदूषण हो जाती हैं, स्त्रियों में व्यभिचार बढ़ जाता है तो संसार गढ़दे की ओर जाता है। इन वैश्याओं ने ही भारत का सत्यानाश किया है। कड़क—2 वाणी भी चलाई है। तुम बच्चियाँ हो स्वर्ग का द्वार खोलने वाली, स्वर्ग का द्वार खोलकरके बैठ जाती हो। वो हैं सूर्यगखायें, पूतनायें, व्यभिचार के आधार पर नर्क का दरवाजा खोलकरके बैठ जाती हैं आओ, पतित बनो।

Well, it is a land (*dharani*). The more you keep the land pure, the purer the fruits it will give. What are even the virgins and mothers? They are the earth. The purer the seed that is sown in that earth [and] the purer the vibrations that are created, the families will be elevated to that extent. Otherwise, the family will go on becoming unrighteous. The Father will say something else; the children will say, do something else. Their opinions will not match with each other. This is why it has been written in the Gita as well: when women become polluted, when adulteration increases among women, the world proceeds towards downfall. These prostitutes themselves have caused the ruination of India. Strict versions have also been spoken. “You daughters are the ones who open the gates of heaven; you open the gate of heaven. They [i.e.] Surpankhas, Pootnas open the gates of hell on the basis of adulteration; “Come and become sinful”.

समय—37.05—39.10

जिज्ञासु— बाबा आपने बोला अव्यक्त स्थिति बनाओ। तो अव्यक्त स्थिति कैसे बनती है?

बाबा— व्यक्त दुनियाँ को, इन आँखों से जो कुछ देखते हो उसको कहते हैं व्यक्त। इन आँखों से जो कुछ भी हमें दिखाई पड़ता है वो सब क्या है? व्यक्त। और इन आँखों से जो नहीं दिखाई पड़ता है वो है अव्यक्त। जैसे आत्मा, बिंदु नहीं दिखाई पड़ती है। देह तो दिखाई पड़ती है। जैसे ब्रह्मा बाबा वो अव्यक्त हो गया। वो इन आँखों से तो दिखाई नहीं

पड़ता। लेकिन ज्ञान के आधार पर हम उसको समझ रहे हैं। ऐसे ही परमपिता परमात्मा शिव इन आँखों से तो दिखाई नहीं पड़ता। लेकिन फिर भी हम पहचान लेते हैं ज्ञान की दृष्टि से कि कौन से तन में परमपिता परमात्मा कार्य कर रहा है।

**Time: 37.05-39.10**

**Student:** Baba, you said, “Make your stage subtle (*avyakt*)”. So, how can we attain the *avyakt* stage?

**Baba:** The corporeal world (*vyakt duniya*), whatever you see through these eyes is called *vyakt* (corporeal). What is all that is visible to us through these eyes? *Vyakt*. And whatever is not visible to these eyes is *avyakt*. For example, the soul, the point is not visible; the body is indeed visible. For example Brahma Baba became *avyakt*; he is not visible to these eyes. But we understand it on the basis of knowledge. Similar is the case with the Supreme Father Supreme Soul Shiva, He is not visible to these eyes. But still we recognize Him from the point of view of knowledge that in which body the Supreme Father Supreme Soul is performing His task.

तो वो हो गया अव्यक्त। ऐसे ही ये दुनियाँ तो सारी नर्क देखने में आ रही है दुख ही दुख है लेकिन ज्ञान की दृष्टि से हम देख लेते हैं कि स्वर्ग अब आने वाला है ज्यादा देर नहीं है। ऐसे ही विनाश है अभी तो शांति चारों तरफ दुनियाँ में फिर भी देखने में आ रही है। सुख भी देखने में आता है तो दुख भी देखने में आता है। लेकिन दुख ही दुख दिखाई पड़े सुख, शांति कहीं भी नज़र ना आवे ऐसा विनाश भी हमें ज्ञान की दृष्टि से सामने दिखाई पड़ेगा कि ये विनाश कोई भी हालत में अब रुक नहीं सकता। उसको कहेंगे अव्यक्त दृष्टि। तो स्वर्ग भी हम अव्यक्त होकर देखें। नर्क भी हम अव्यक्त हो करके देखें कि नरक की क्या स्टेज आने वाली है। अभी जो नर्क है उसको हर जगह, सारी दुनियाँ में, हर स्थान पर रौरव नर्क नहीं कहेंगे। लेकिन ऐसा भी टाइम आएगा कि सारी दुनियाँ में, हर देश में, हर गाँव में, हर शहर में रौरव नर्क दिखाई देगा।

So, that is *avyakt*. Similarly, the entire world appears to be hell, there is only sorrow [in it], but from the point of view of knowledge we see that heaven is going to come now; there is not much time left. Similar is the case with destruction; now peace is still visible everywhere in the world. Happiness as well as sorrow is visible. But [when] only sorrow is visible, happiness and peace are not visible anywhere; when such destruction is visible right in front of us through the eyes of knowledge, [when we see] that this destruction cannot stop under any circumstance, it will be called *avyakt* vision. So, we should also see heaven by becoming *avyakt*. We should also see hell by becoming *avyakt*, that which stage of hell is going to come. The hell at present will not be called terrible hell (*raurav narak*) everywhere, in the entire world, at every place. But such a time will also come when a terrible hell will be visible in the entire world, in every country, in every village and in every city.

**समय—39.12—43.00**

**जिज्ञासु—** बाबा निष्काम कर्म किसे कहा जाये?

**बाबा—** निष्काम कर्म करने का मतलब जो भी श्रीमत के अनुकूल है वो कर्म करते जाओ, करते जाओ। ये नहीं देखना है कि इसका रिज़ल्ट हमको मिल रहा है, नहीं मिल रहा है, क्यों नहीं मिल रहा है। क्यों? क्योंकि हम अपने भाग्य को जानते नहीं हैं कि 63 जन्मों में हमने किस तीव्र गति से या धीमी गति से कर्म किए हैं। इसीलिए निश्चित हो करके दृढ़ता पूर्वक, निश्चय पूर्वक अपने कर्म करते जायें। आशा न रखें कि हमारे कर्मों का प्रत्यक्ष फल हमको क्यों नहीं मिल रहा है। कब मिलेगा? जब नई दुनियाँ बनेगी तो उसका रिज़ल्ट हमको हमारे कर्मों का ज़रूर मिलेगा। ये है निष्काम कर्म। बाकी ऐसे नहीं है कि जो भी कर्म करें उसमें इच्छा ही नहीं रखें। नहीं। हमें तो बाबा ने निष्काम कर्म की व्याख्या बताई है बाबा हमको बताते हैं कि

तुमको स्वर्ग में जाना है। अच्छे कर्म करेंगे तब स्वर्ग में जायेंगे, श्रीमत के अनुकूल कर्म करेंगे तब स्वर्ग में जायेंगे या मनमत और मनुष्यों की मत पर करेंगे तो स्वर्ग में जायेंगे?

जिज्ञासु— श्रीमत पर।

**Time: 39.12-43.00**

**Student:** What is meant by selfless actions (*nishkaam karma*)?

**Baba:** [Performing] selfless actions means go on performing the actions that are in accordance with *shrimat*. You should not see whether you are getting the result for that or not or why is it that you are not getting its results. Why? It is because we do not know about our fortune that with what kind of fast or slow speed we have performed actions in the 63 births. This is why you should go on performing actions with determination and faith in a carefree manner. You should not keep hopes [thinking:] “Why aren’t we getting direct results of our actions”. When will you get it? When the new world is established, then we will certainly get the result of our actions. This is selfless action. As for the rest, it is not that you should not have any desire at all in the actions that you perform. No. Baba has given us the definition of selfless actions; Baba tells us, “You have to go to heaven”. Will you go to heaven if you perform good actions, if you perform actions in accordance with *shrimat* or will you go to heaven if you perform actions on the opinion of your mind and that of the human beings?

**Student:** On *shrimat*.

बाबा— श्रीमत पर अगर हम कर्म करेंगे। श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ जो पार्टधारी इस संसार में प्रैक्टिकल में आया हुआ है उसके अनुसार जैसे कहे वैसे कर्म करेंगे तो हम जरूर स्वर्ग में जावेंगे। ऐसा पक्का निश्चय बुद्धि धारण करके चलना जीवन में। ये नहीं कि ‘हमने इतने लम्बे समय तक हमने अच्छा कर्म किया, हमने श्रीमत के बरखिलाफ काम तो किया नहीं लेकिन फिर हमको रिजल्ट क्यों नहीं मिल रहा है?’ अगर रिजल्ट मिलने की आशा अभी रखते हैं इसका मतलब हम निष्काम कर्म नहीं कर रहे हैं। और यही दुख का कारण बन जाता है। अच्छा कर्म करते जाओ, करते जाओ, करते जाओ, श्रीमत के अनुकूल चलते जाओ, फल की आशा नहीं रखनी है क्यों नहीं मिल रहा है। क्योंकि हमें बाप ने बताया है कि जो भी तुम अच्छे कर्म करते हो उसका फल कहाँ मिलेगा? अगले जन्म में मिलेगा या यही लेना है?

जिज्ञासु— अगले जन्म में।

बाबा: भविष्य 21 जन्मों में लेना है। यहाँ हर एक कर्म का फल नहीं ढूँढ़ना है कि हमको क्यों नहीं मिलता है। ये भी कर्मों की गुह्यगति में एक बात आती है। कोई—2 इस बात में बहुत ज्यादा मूँझ रहे हैं, बहुत परेशान हो रहे हैं।

**Baba:** If we perform actions in accordance with *shrimat*, if we perform actions as per the directions given by the most elevated actor who has come in this world, then we will certainly go to heaven. We should develop such a firm faithful intellect and move ahead in our life. You should not think: “We have performed good actions for such a long time, we didn’t act against the *shrimat*, yet, why are we not getting its result?” If we nurture the desire to get result now, then it means, we are not performing selfless actions. And this very [subject] becomes the reason for sorrow. Go on doing good actions. Continue to follow *shrimat*; you should not hope [to get] fruits that why aren’t your getting it? It is because the Father has told us: where will you get the fruits of the good actions that you perform? Will you get it in the next birth or do you wish to take it in this birth itself?

**Student:** In the next birth.

**Baba:** We have to obtain it in the future 21 births. We should not search for the fruits of every action here [thinking:] “Why don’t we get it (results)”? This is also one of the aspects in the secret course of actions (*karma*). Some people are getting very confused, disturbed on this subject.

जिज्ञासु— जो पुरुषार्थ करने वाले परिवार होते हैं वो तो लक्ष्य रखते हैं ना 108 में जायेंगे, 1000 में जायेंगे, अष्टदेवों में जायेंगे, एन.एस में जाना। वो लक्ष्य रखना .....

बाबा— एन.एस. में जाना? एन.एस में जाना ये वर्तमान की बात है या भविष्य की बात है?

जिज्ञासु— ये वर्तमान पुरुषार्थ का लक्ष्य है।

बाबा— तो फिर एन.एस. में जो अभी चले गए हैं 50-60 वो सब स्वर्ग में चले गए क्या? फिर? ये तो गलतफहमी हो गई। कोई स्वर्ग थोड़े ही बन गया है वो तो नई दुनियाँ का फाऊन्डेशन लगा है, फाऊन्डेशन अंडरग्राऊंड होता है। अंडरग्राऊंड क्या सबको दिखाई पड़ता है क्या? आजकल तो मकान बनाते हैं तो भी चारों तरफ से क्या करते हैं? मकान बनाते समय क्या करते हैं, कन्स्ट्रक्शन करते समय? छुपा देते हैं। ताकी कोई अंदर के कन्स्ट्रक्शन के प्लानिंग को देखे नहीं। जोग, जुगुति, जप, मंत्र प्रभाऊ, फलै तबै जब करिए दुराऊ। नहीं तो मायावी आत्मायें भंडाफोड कर देती हैं।

**Student:** The *purusharthi* (those who make spiritual effort] families fix a goal (for themselves) that they will come in 108, 1000, eight deities, or NS. To set that goal....

**Baba:** To go to NS? Is going to NS a subject of the present time or of the future?

**Student:** This is the goal for the present *purusharth*.

**Baba:** Have all the 50-60 people who have gone to NS at present gone to heaven? Then? This is a misunderstanding (*galatfahami*). A heaven has not been established. That is a foundation of the new world which has been laid; a foundation is laid underground (construction); is something underground visible to everyone? Nowadays when people build a house, what do they do from all the sides? What do they do when they build a house or during construction? They hide it so that nobody sees the planning of the construction. *Jog, juguti, jap, mantra prabhaau, falai tabai jab kariye duraau* (meditation, tactics, chanting, mantras will be effective only when you do it secretly). Otherwise, the deceptive (*mayavi*) souls make it public.

.....  
Note: The words in italics are Hindi words. Some words have been added in the brackets by the translator for better understanding of the translation.